अध्याय –द्वितीय

सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन

अध्याय –द्वितीय

सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन

2.1 प्रस्तावना :

सम्बन्धित साहित्य से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से सम्बन्धित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान–कोशों, पत्र–पत्रिकाओं, प्रकाशित तथा अप्रकाशित शोध प्रबंधों एवं अभिलेखों से है जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन ,परिकल्पनाओं के निर्माण , अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने एवं कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता करता है।

2.2 सम्बन्धित साहित्य का महत्व :

डब्ल्यू. आर. बोर्ग के मतानुसार किसी भी क्षेत्र का साहित्य उस आधारशिला के समान है जिस पर सम्पूर्ण भावी कार्य आधारित होता है। यदि सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षणद्वारा इस नींव को दढ़ नहीं कर लेते तो हमारे कार्य के प्रभावहीन एवं महत्वहीन होने की संभावना है यह पुनरावृत्त भी हो सकता है ।

2.3 सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण से लाभ :–

1. सम्बन्धित साहित्य अनावश्यक पुनरावृत्ति से बचाता है।
2. इससे अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने में सहायता मिलती है।
3. शोध प्रबन्ध के एक महत्वपूर्ण अंग के रूप में अनुसंधान के ज्ञान, उसकी स्पष्टता तथा कुशलता को स्पष्ट करता है।
4. अब तक उस क्षेत्र में हो चुके कार्य की सूचना देता है।
5. पहले किये गये कार्य के ऑकड़े वर्तमान अध्ययन में सहायक होते है।

2.4 संबंधित साहित्य :-

2.4.1 भारत में हुए शोध कार्य :

• ***रेड्डी (1972)*** व्यावसायिक आवश्यकता एवं व्यावसायिक चुनाव से संबंधित अध्ययन किया। यह अध्ययन उच्चतर माध्यमिक कक्षा के विद्यार्थियों पर किया गया । इस शोध कार्य में परिवार का आर्थिक स्तर तथा व्यावसायिक चुनाव एवं व्यावसायिक आवश्यकता के मध्य सहसंबंध पाया गया ।

• ***दुबे (1974)*** ***ने असम के*** आदिवासी एवं गैर–आदिवासी विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा एवं शैक्षिक आकांक्षा का अध्ययन किया। अध्ययन से यह निष्कर्ष निकला कि आदिवासी एवं गैर–आदिवासी विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा एवं शैक्षिक आकांक्षा में कोई अंतर नहीं है ।

• ***वोहरा (1977)*** ने व्यावसायिक चयन एवं बुद्धिमत्ता शैक्षिक अभिरुचि ,व्यक्तित्व एवं शैक्षिक उपलब्धि में सहसंबंध पर शोधकार्य किया गया। यह अध्ययन पालिटेकनिक के विद्यार्थियों पर किया गया। इस अध्ययन में व्यावसायिक चयन एवं बुद्धिमत्ता शैक्षिक अभिरुचि ,व्यक्तित्व एवं शैक्षिक उपलब्धि में कोई सहसंबंध नही पाया गया।

• ***सिन्हा ने (1978)*** व्यावसायिक रुचि से संबंधित अध्ययन किया। इस शोधकार्य में माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की व्यावसायिक रुचि पर पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन किया इसमें धनात्मक सहसंबंध पाया गया।

• ***Niranj (1978)*** Effects of Socio- Economic background on educational achievement of 8th class student.

उन्होनें अपने अध्ययन में पाया कि बालको की उपलब्धि उनकी सामाजिक– आर्थिक पृष्ठभूमि से प्रभावित होती है। बालको की शैक्षिक उपलब्धि का माता–पिता की शिक्षा व उनकी आय से घनिष्ट संबंध होता है। जिन बालको के माता–पिता उच्च शिक्षित व उच्च वेतन वाले होते है उनकी शैक्षिक उपलब्धि उच्च होती है।

- ***सिन्हा ने (1978)*** में व्यावसायिक रुचि से संबंधित अध्ययन किया। इस शोधकार्य में माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की व्यावसायिक रुचि पर पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन किया। जिसमें धनात्मक सहसंबंध पाया गया ।

- **Robert (1988)** A Study of the Socio- Economic status and vocational choice of students.

विद्यार्थियों का व्यावसायिक चयन तथा उनके अभिभावको की व्यावसायिक आकांक्षा के मध्य संबंध का अध्ययन करना। निष्कर्ष में पाया गयाकि उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों का व्यावसायिक चयन उनके सामाजिक– आर्थिक स्तर तथा अभिभावको की व्यावसायिक आकांक्षाएँ से स्वतंत्र थी। कृषि, कला, साहित्य वाणिज्य, विज्ञान तथा सामाजिक विज्ञान विषय में छात्र एवं छात्राओं का व्यावसायिक चयन समान पाया गया।

- ***एस.एस.(1979)*** ने शहरी और ग्रामीण क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की व्यावसायिक अभिलाषा से संबंधित मनोवैज्ञानिक और सामाजिक तथ्य पर आधरित एक अध्ययन किया, इसमें पाया कि व्यावसायिक अभिलाषा के अंतर्गत अधिकांश विद्यार्थियों ने इंजीनियर व्यवसाय का चयन किया और शेष विद्यार्थियों ने अन्य प्रकार के व्यवसायों को प्राथमिकता दी ।

- ***गौतम (1981)*** ने विद्यार्थियों के व्यावसायिक चयन तथा अभिभावको के व्यावसायिक परिप्रेक्ष्य का अध्ययन किया। इस शोधकार्य हेतु उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के अंतिम वर्ष के विद्यार्थी तथा हाईस्कूल के प्रथम वर्ष के 130 विद्यार्थियों का चयन किया। उन्होने एक व्यावसायिक चयन सूची बनाई तथा अध्यापको की सहायता से छात्र द्वारा जानकारी प्राप्त की गई। इस अध्ययन में विद्यार्थियों के व्यावसायिक चयन तथा उनके अभिभावको के व्यावसायिक परिप्रेक्ष्य के स्वरुप में सहसंबंध पाया गया ।

- ***शशिप्रभा (1982)*** ने व्यावसायिक पसंद के निर्धारक के रुप में सामाजिक– आर्थिक स्तर और व्यावसायिक मूल्यों का अध्ययन

किया। इस अध्ययन से निष्कर्ष निकला कि निम्न सामाजिक– आर्थिक स्तर के व्यक्तियों की साहित्यिक नौकरियों में सर्वाधिक रुचि पायी गयी, तथा उच्च सामाजिक– आर्थिक स्तर के व्यक्तियों की अधिकारी पद की नौकरियों में सर्वाधिक रुचि पायी गयी। मध्यम सामाजिक– आर्थिक स्तर के व्यक्तियों की अधिकारी पद में सबसे कम रुचि पायी गयी।

- ***चाँद (1985)*** ने विभिन्न नागा आदिवासी विद्यार्थियों का उनके आत्म बोध, सामाजिक– आर्थिक स्तर, व्यावसायिक आकांक्षा एवं शैक्षिक आकांक्षा और शैक्षिक उपलब्धि के संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन किया।

  निष्कर्षः उच्च सामाजिक– आर्थिक स्तर के तथा निम्न सामाजिक– आर्थिक स्तर के अंगामी जनजाति विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षाओं में सार्थक अंतर पाया गया। जबकि उच्च एवं मध्यम सामाजिक– आर्थिक स्तर के अंगामी जनजाति विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षाओं में समानता पायी गयी ।

- ***डॉ. सिंह एवं इन्दिरा कुमारी (1986)*** ने दृष्टिबाधित छात्रों के व्यावसायिक चयन का अध्ययन किया। यह एक तुलनात्मक अध्ययन था। यह अध्ययन सर्वेक्षण विधि से किया गया । न्यादर्श के रुप में दिल्ली के 2 विशिष्ट विद्यालय के 30 छात्र एवं 30 दृष्टिहीन छात्राओं को लिया गया कक्षा 9 से 12 तक के विद्यार्थी थे । इस शोधकार्य में उन्होने छात्र एवं छात्राओं के मध्य व्यावसायिक चयन में अंतर पाया गया।

- ***Choudhary (1990)*** A Study of the Aspiration of 9th Standard of English Mediam Schools Students in pune city.

निष्कर्ष : 40 प्रतिशत विद्यार्थी या तो डॉक्टर बनना चाहते थे या इंजीनियर बनना चाहते थे । पिता के व्यवसाय तथा विद्यार्थी के व्यावसायिक चयन के मध्य कोई संबंध नहीं पाया गया।

• ***Pareek (1990)*** A comparative study of the self -concept, personality traits of adolescents studying in central school, state government school and private school in Rajsthan.

विभिन्न प्रकार के विद्यालय में पढ़ने वाले किशोरों के स्व–प्रत्यय, व्यक्गित गुण एवं आकांक्षा में संबंध का अध्ययन करना। जिसमें न्ययदर्श के रूप में 750 विद्यार्थियों को विभिन्न विद्यालयों से चयनित किया गया । इस अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षः विभिन्न प्रकार के विद्यालय में पढ़ने वाले किशोरों के व्यक्गित गुण एवं आकांक्षा स्तर के मध्य कोई सार्थक संबंध नहीं पाया गया ।

• ***राजुरकर (1993)–*** कक्षा 11वीं तथा 12वीं के छात्र–छात्राओं की मानसिक योग्यता, व्यावसायिक रूचि का अध्ययन किया। न्यादर्श के रूप में कला, विज्ञान तथा वाणिज्य संकाय के 200 छात्र छात्राओं को चुना गया। मानसिक योग्यता परीक्षण के लिए एस. एस. जलोटा के परीक्षण का उपयोग किया तथा व्यावसायिक रूचि मापनी एस. पी. कुलश्रेष्ठ के प्रपत्र का उपयोग किया। यह अध्ययन सर्वेक्षण विधि से किया गया । अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि छात्र– छात्राओं वाणिज्य संबंधी व्यावसायिक रूचि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

• ***शर्मा (1993)*** ने नगरीय एवं उपनगरीय क्षेत्रों में अध्ययनरत बालिकाओं की मानसिक योग्यता एवं व्यावसायिक रूचि का तुलनात्मक अध्ययन किया । यह अध्ययन सर्वेक्षण विधि से किया गया । कुल न्यादर्श संख्या 120 थी, जिसमें नगरीय पाठशालाओं के कक्षा 9 से 12 कक्षा में अध्ययनरत 60 बालिकाओं तथा उपनगरीय क्षेत्र की 60 बालिकाओं को सम्मिलित किया इस अध्ययन में नगरीय एवं उपनगरीय छात्राओं की मानसिक योग्यता में सार्थक अंतर पाया गया, जबकि व्यावसायिक रूचि में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

• ***शर्मा(1994)*** आदिवासी एवं गैर–आदिवासी क्षेत्र की बालिकाओं की व्यावसायिक एवं शैक्षिक आकांक्षा का अध्ययन करना था। प्रतिदर्श के

रुप में कुल 129 छात्राओं से आँकडें प्राप्त किये गये। इसमें 51 छात्राऐं आदिवासी क्षेत्र की, तथा 78 छात्राऐं गैर–आदिवासी क्षेत्र की ली गयी। इस अध्ययन से निष्कर्ष निकले, कि आदिवासी एवं गैर–आदिवासी क्षेत्र की बालिकाओं की व्यावसायिक आकांक्षा एवं शैक्षिक आकांक्षा में सार्थक अंतर हैं।

- ***मैसी (1995) ने*** सामाजिक– आर्थिक संदर्भ में बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि शीर्षक पर लघु शोधकार्य किया।

इन्होनें अपने अध्ययन कि में पाया बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि बालको के समान सामाजिक– आर्थिक स्तर होने पर बालको को शैक्षिक अवसर प्राप्त होने पर भी उसका सदुपयोग करती हैं, व यह तथ्य उभरकर आया है कि शासकीय विद्यालय के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि को उनका सामाजिक– आर्थिक स्तर प्रभावित करता है।

- ***Ali (1998)*** A Study of personal values career aspiration, acadmic achievement and socio- economic status as determination of educational choice at senior secondary level.

निष्कर्षः बालक व बालिकाओं की उपलब्धि अभिप्रेरणा व सामाजिक– आर्थिक स्थिति उनकी शैक्षिक उपलब्धि का किसी न किसी प्रकार से प्रभावित अवश्य करती है।

- **बरखने *(1999)*** आदिवासी एवं गैरआदिवासी छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक– आर्थिक स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन किया गया । निष्कर्ष में पाया गया कि आदिवासी एवं गैर आदिवासी छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है लेकिन सामाजिक– आर्थिक स्थिति में अंतर है।

- **गर्ग (2000)** आदिवासी विद्यार्थियों के दृष्टिकोण का अध्ययन किया गया निष्कर्ष में पाया गया कि परिवार के व्यवसाय का सार्थक प्रमाण दिखाई देता है।

- ***Chandel and Vibhalaxmi (2011)*** A comparative study of educational aspiration of internet user and non- user.

निष्कर्ष :इंटरनेट उपयोग करने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा इंटरनेट उपयोग नहीं करने वाले विद्यार्थियों से अधिक पायी गयी। कला, वाणिज्य, तथा विज्ञान स्ट्रीम वाले विद्यार्थी जो इंटरनेट उपयोग करते उनकी शैक्षिक आकांक्षा इंटरनेट उपयोग नहीं करने वाले विद्यार्थियों से अधिक पायी गयी। अंततः यह निष्कर्ष निकला कि पूर्वस्नातक विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा पर इंटरनेट का प्रभाव पड़ता है।